# इकाई 11 पहुंच, अधिसंरचनात्मक सुविधा एवं भूमि उपयोग : मूल मुद्दे

**इकाई की रूपरेखा**


11.0 उद्देश्य
11.1 प्रस्तावना
11.2 पर्यटन के लिए योजना का महत्व
11.3 पर्यटन नियोजन : व्यापक संदर्भ
  11.3.1 वहन क्षमता
  11.3.2 पर्यटक संसाधनों का मूल्यांकन
  11.3.3 अधिसंरचनात्मक सुविधाओं का विकास
11.4 पर्यटन मास्टर प्लान
  11.4.1 भौतिक विकास के मुद्दे
  11.4.2 नगर में पर्यटक स्थल
  11.4.3 योजना द्वारा संरक्षण
  11.4.4 स्थानीय योजना पक्ष
11.5 भौतिक योजना: पहाड़ी पर्यटन
  11.5.1 योजना की अनिवार्यताएं
  11.5.2 पहुंचने की सुविधा
11.6 भौतिक विकास : तटीय रिसॉर्ट
11.7 सारांश
11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- योजना बद्ध पर्यटन के महत्व और अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभावों को समझ सकेंगे;
- पर्यटन विकास के लिए प्रमुख दबाव क्षेत्रों को समझ सकेंगे;
- मास्टर प्लान और उसके विभिन्न घटकों के महत्व को समझ सकेंगे; और
- पर्यटन योजना को पर्वतीय और तटीय क्षेत्रों की केस स्टडी के द्वारा समझ सकेंगे।

## 11.1 प्रस्तावना

टी.एस. 1 में हमने पर्यटन नीति और योजना सहित सन्दर्भ में अधिसंरचनात्मक सुविधा के विकास पर विचार विमर्श किया है। इस इकाई में हम विशिष्ट स्थितियों के लिए उस सामान्य बोध को प्रयोग में लाएंगे। यह इकाई पर्यावरणीय मुद्दों पर बल देते हुए विकासशील एवं टिकाऊ पर्यटन में संरचनात्मक सुविधाओं के महत्व को परिचित कराने का प्रयास करती है। यह राष्ट्रीय विकास में पर्यटन की भूमिका को परिभाषित किए जाने से प्रारंभ होती है और इसी संदर्भ में नियोजित पर्यटन के महत्व को उजागर करती है। फिर यह अधिसंरचनात्मक सुविधा के विकास के लिए अनिवार्य घटकों के अर्थ की व्याख्या करती है। यह इकाई पर्यटन विकास के सुव्यवस्थित उपागम को ध्यान में रखते हुए 'मास्टर प्लान' की भूमिका को भी समझाती है। अंत में यह इकाई पर्वतीय रिसॉर्ट और तटीय क्षेत्रों के संदर्भ में पहुंच, भूमि उपयोग और अधिसंरचनात्मक सुविधा के मुद्दों के अध्ययन की चर्चा भी करती है।

1970 और 1980 के दशकों में पर्यटन उद्योग की वृद्धि की वजह से पर्यटन केंद्रों और अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के विकास के लिए कुछ नई चुनौतियां आ खड़ी हुई हैं। पर्यटन विकास के अधिकारियों को न केवल पर्यटकों की संख्या में होने वाली वृद्धि का ध्यान रखना पड़ेगा बल्कि ऐसे कारकों द्वारा, जैसे गतिशीलता प्रारूप और यात्रा के ढंग में परिवर्तन, बदलती हुई पसन्द, स्तर आदि के कारण आने वाले परिवर्तनों को भी ध्यान में

रखना पड़ेगा। पर्यटन किसी भी अन्य उद्योग की तरह राष्ट्रीय, प्रादेशिक और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। यह सामान और सेवाओं के उत्पादन को प्रभावित करता है जिसके कारण विशेष क्षेत्र द्वारा पर्यटकों की मांगों की आपूर्ति में वृद्धि हो जाती है। यह रोजगार भी मुहैया कराता है, कौशल और ठेकेदारी के विकास को प्रेरित करता है और आय वितरण प्रारूप को प्रभावित करता है।

## 11.2 पर्यटन के लिए योजना का महत्व

राष्ट्रीय सरकार तथा प्रादेशिक सरकार पर्यटन की प्रसारणशील दुनिया में उचित योजना पर अधिक से अधिक बल देती है। यह पर्यटन प्रोत्साहन (एकल राष्ट्रीय उत्पाद बढ़ाने वाले एक प्रमाणित माध्यम होने के कारण विशेषकर विकासशील देशों में) और गन्तव्य क्षेत्र के भौतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण को सुरक्षित रखने में सरोकारों के मध्य संतुलन सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है।

पर्यटन विकास से संबंधित क्रियाओं में योजना के महत्व का उद्देश्य पर्यटन संबंधी क्रियाओं और स्थानीय पर्यावरण के मध्य संतुलन बनाए रखना है। ऐसा विशेष रूप से विकासशील देशों में है। यहां यह प्रभाव सबसे सबल हैं क्योंकि उन्हें ऐसी संरचनात्मक सुविधाएं विकसित करनी चाहिएं जो किसी भी पर्यटन क्षेत्र की सांस्कृतिक विशेषताओं को सुरक्षित रख सकें और हर प्रकार के सामाजिक आर्थिक विकास को प्रोत्साहित भी करें। साथ ही साथ पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए अपने भौतिक पर्यावरण की सुरक्षा भी करनी चाहिए और उसे बढ़ाना चाहिए।

पर्यटन संबंधी गतिविधियों के लिए पर्यटन प्रोत्साहन और अधिसंरचनात्मक सुविधाओं का विकास किसी भी पर्यटन क्षेत्र पर सामाजिक-सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक, भौतिक और पर्यावरणीय प्रभाव डालेगा जिसके लिए विकासीय निर्णय लेने से पूर्व वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करते हुए योजनाबद्ध मूल्यांकन एवं विश्लेषण करना चाहिए। ये पर्वतीय पर्यावरण के संवेदनशील प्रतिवेशों, वन्य जीवों एवं तटीय रिसॉर्ट और अन्य परम्परागत सांस्कृतिक दृष्टि से संवेदी गंतव्यों पर अधिक लागू होते हैं। इस प्रकार पर्यटन विकास के हर कार्यक्रम का मौलिक उद्देश्य सकारात्मक प्रभावों को बढ़ावा देना और गंतव्य क्षेत्रों के सामाजिक, आर्थिक और भौतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को घटाने वाला होना चाहिए।

## 11.3 पर्यटन नियोजन : व्यापक संदर्भ

राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजनाओं में पर्यटन विकास हेतु महत्व दिए जाने वाले प्रमुख क्षेत्र निम्नवत हैं जो स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन नियोजन से संबंधित हैं: (टी.एस.-1 की इकाई 29 भी देखिए)

1) सीमित संसाधनों को बहुत अधिक क्षेत्रों/केंद्रों में फैलाने के बजाए कुछ ऐसे चुने हुए पर्यटक क्षेत्रों एवं केंद्रों को विकसित किया जाए जो पर्यटकों में लोकप्रिय हों।

2) देश के पारंपरिक सांस्कृतिक और भ्रमण संबंधी पर्यटन को सौंदर्य बोधी पर्यावरणात्मक और सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यटन की ओर ले जाना चाहिए।

3) अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने और उनके ठहरने की अवधि को बढ़ाने के लिए हिमालय, रेतीले तटों वाली सुनहरी धूप से विशाल समुद्र तटीय क्षेत्र और वन्य जीवन जैसे पर्यटन संसाधनों का इस्तेमाल करके क) ट्रैकिंग, ख) शीतकालीन क्रीड़ा, ग) वन्य जीवन पर्यटन और घ) तटीय रिसॉर्ट जैसे परम्परागत क्षेत्रों को विकसित करना चाहिए।

4) सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व की राष्ट्रीय विरासत की परियोजनाओं का पुनरुद्धार और संतुलित विकास हो ताकि भारत एक सांस्कृतिक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित हो सके। साथ ही पर्यटन का राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण के प्रमुख माध्यम के रूप में उपयोग हो सके।

वृहत, मध्य और लघु आयामी पर्यटन काम्पलेक्स की योजना और विकास पर्यटन संसाधनों और पर्यटन गतिविधियों को संघटित कर सकेंगे। इससे एक ओर तो सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणात्मक उद्देश्यों की दृष्टि से और दूसरी ओर पर्यटकों की ढांचागत सुविधाओं की आवश्यकताओं की दृष्टि से अधिकतम लाभ प्राप्त हो सकेगा। पर्यावरणीय संरक्षण को ध्यान में रखते हुए विभिन्न गंतव्य क्षेत्रों के लिए प्रायोजित अनेक पर्यटन

गतिविधियों के लिए विविध प्रकार की ढांचागत सुविधाओं की मांग की आपूर्ति का प्रबंध पर्यटन विकास योजनाओं के द्वारा किया जाना चाहिए। पर्यटन गतिविधि क्षेत्र अपने अंदर विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों को समेटे हुए है:

1) सहनशील मनोरंजन के लिए प्राकृतिक सौंदर्य के विस्तृत क्षेत्र

2) मनोरंजन और अवकाश व्यतीत करने के लिए क्षेत्र जैसे समुद्र तट के रिसॉर्ट

3) अनुकूल जलवायु वाले सुखदायी क्षेत्र जैसे पर्वतीय रिसॉर्ट

4) ऐतिहासिक स्थल स्मारकीय काम्पलेक्स मेले और उत्सवों वाले केंद्रों सहित सांस्कृतिक पर्यटन के क्षेत्र

5) धार्मिक पर्यटन क्षेत्र जैसे तीर्थ स्थल और मंदिरों के नगर

6) साहसिक पर्यटन क्षेत्र अर्थात ट्रैकिंग शिलारोहण, पर्वातोरहण, स्कीइंग आदि, और

7) विशेष दिलचस्पी के क्षेत्र अर्थात वन्य जीवन क्षेत्र, आकर्षक वनस्पति एवं प्राणी समूह के क्षेत्र, पक्षी विहार आदि।

### 11.3.1 वहन क्षमता

पर्यटन संसाधन पर आधारित उद्योग है और संसाधन का मूल्यांकन इसलिए महत्वपूर्ण है कि संसाधन संरक्षण के क्षेत्रों की पहचान की जा सके और पर्यटन को बेहतर प्रोत्साहन मिल सके। संसाधन की पहचान करना और उसे विभिन्न प्रतिस्पर्द्धी उपयोगों के लिए निर्दिष्ट करना भी अनिवार्य है और वह सामर्थ्य निधार्रित करना भी जो स्थान और गतिविधि दोनों के अनुसार उपयुक्त हो। वहन क्षमता की धारणा पर्यटन सुविधाओं और अधिसंरचनात्मक सुविधा की कुशल योजना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों जैसे संवेदनशील स्थानों के लिए। पर्यटन क्षेत्रों के आवश्यकता से अधिक और गलत इस्तेमाल से इन क्षेत्रों की संमस्त सुविधाएं संतृप्त हो जाती हैं (भौतिक क्षमताएं), पर्यावरण का ह्रास होता है (पर्यावरणीय या पारिस्थितिक क्षमता), या पर्यटक का आनन्द कम हो जाता है (मनोवैज्ञानिक क्षमता)। अब ये धारणाएं आम तौर से स्वीकृत की जा चुकी हैं किन्तु अवसीमाओं के मापन की कठिनाइयों ने (शायद भौतिक क्षमता को छोड़ कर) योजना यंत्र के रूप में वहन क्षमता के उपयोग को सीमित कर दिया है। मनोरंजनात्मक क्षेत्रों की भौतिक और पारिस्थितिक क्षमता सामाजिक क्षमता के साथ मिलकर आदर्श क्षमता दिशा निर्देशन के सिद्धांत को सुनिश्चित करते हैं। प्रकृति में सुरक्षित क्षेत्रों और पारिस्थितिक दृष्टि से नाजुक या संवेदनशील क्षेत्रों अर्थात पर्वतीय पर्यावरण को पारिस्थितिक क्षमता दिशा निर्देशों के प्रति और अधिक विश्वास दिलाना चाहिए और इन्हें उस पर्यावरण की दृष्टि से प्रतिपादित करना चाहिए जिसका आवास एक अभिन्न भाग है। प्राय: इसे विकसित करने वालों के तुरंत लाभ प्राप्ति के उद्देश्यों के कारण इसकी उपेक्षा की जाती है। यह स्वस्थ प्रवृत्ति नहीं है और इस पर रोक लगानी होगी।

### 11.3.2 पर्यटक संसाधनों का मूल्यांकन

प्राकृतिक और मानव निर्मित आकर्षण के आधार पर ही पर्यटन विकास का कोई कार्यक्रम विकसित किया जा सकता है। इस संसाधन आधार की प्राय: उपेक्षा की जाती है या उसकी जटिलताओं को समझे और सुलझाए बिना अथवा इसके विशेष गुणों, संभावनाओं और प्रतिबंधों के विश्लेषण के बिना इसे कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया जाता है।

यहां दो मौलिक प्रश्न उठते हैं:

क) किसी क्षेत्र के संसाधन के आधार की पहचान कैसे की जाए? और

ख) ऐसे संसाधन का उनके बाजार के संदर्भ में मूलभूत महत्व का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाए? इन प्रश्नों के जवाब के लिए पहले संसाधन आधारों की एक सूची बनानी होगी और फिर मूल्यांकन की उचित तकनीकों की ओर ध्यान देना होगा। संसाधन उपयोगिता न्यूनतम सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों के साथ मांग (पर्यटकों की अभिरुचि जिसे सर्वेक्षण द्वारा जाना जा सकता है) और आपूर्ति (मांग पूरी करने के लिए स्थानीय क्षमता) का परिणाम है। इस विषय में किसी पर्यटन विकास कार्यक्रम के प्रारंभ से पूर्व पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन कराना चाहिए।

### 11.3.3 अधिसंरचनात्मक सुविधा का विकास

यदि पर्यटन को किसी क्षेत्र के विकास कार्यों के अभिन्न घटक के रूप में प्रभावी ढंग से कार्य करना है तो पर्यटन से संबंधित भौतिक अधिसंरचनात्मक सुविधाओं का विकास अनिवार्य है। अधिसंरचनात्मक सुविधाओं की कल्पना भी क्षेत्र और मेजबान जनसंख्या की सम्पूर्ण आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। किसी रिसॉर्ट को पर्याप्त पैमाने पर आकर्षण प्रदान करना पर्यटक केंद्र के विकास के लिए एक अत्यावश्यक पहलू है। मोटे तोर पर कहा जाता है कि पर्यटन केंद्र को सामूहिक रूप से गुण प्रदान करने वाले तीन प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं:

i) पहुंचने की सुविधा

ii) आवासीय सुविधाएं और सेवाएं, और

iii) मनोरंजन

**i) पहुंचने की सुविधा**

पर्यटन स्थान या पर्यटक गंतव्य क्षेत्र के संदर्भ में पहुंचने की सुविधा में सम्मिलित हैं :

क) पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण नगर के विशिष्ट स्थानों के लिए निकटवर्ती हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन, सड़क मार्ग, टर्मिनल या फिर अन्य प्रवेश बिन्दुओं से नगर की ओर जाने की सुविधा।

ख) परिवहन के तीन परम्परागत साधनों अर्थात सड़क, रेल और वायु द्वारा देश के निकटवर्ती स्थल से पर्यटन केंद्र और पर्यटन गंतव्य क्षेत्र तक पहुंचने की सुविधा और क्षेत्र के अंदर पर्यटक की रुचि के अन्य महत्वपूर्ण केंद्रों के साथ संयोजन।

**ii) आवासीय सुविधाएं और सेवाएं**

पर्यटन केन्द्र और गंतव्य क्षेत्रों पर मात्रात्मक एवं गुणात्मक रूप से पर्यटकों की आवश्यताओं को संतुष्ट करने वाले पर्याप्त आवास की व्यवस्था एक महत्वपूर्ण कारक है। कभी कभी अच्छा आवास पर्यटकों को अधिक समय तक विश्राम करने की प्रेरणा देता है। भारत के मौजूदा संदर्भ में इस मौलिक सुख सुविधा का अभाव पहुंचने की अपेक्षा पर्यटक आगमन के लिए अधिक बड़ा बाधक है। विभिन्न केंद्रों पर दिए जाने वाले आवास की मात्रा एवं स्वरूप पर्यटकों की जरूरतों पर निर्भर करेगा किंतु कुल मिलाकर पर्यटन के लिए आवास आरामदेह समग्र सुविधाओं और सेवाओं सहित और आर्थिक तथा भौतिक दृष्टिकोण से स्थिति के अनुरूप होना चाहिए। साथ ही आवासीय विकास के लिए आवश्यक अन्तर्निमित ढांचागत सुविधा होनी चाहिए।

पर्यटक कॉम्पलेक्स आकर्षिक बनाने के लिए निरंतर विद्युत एवं सुरक्षित जल आपूर्ति, मल निकास, अपवहन और स्वच्छता प्रबंध आदि मौलिक सुविधाएं और सेवाएं ऐसे अनिवार्य तत्व हैं जिन्हें सुनिश्चित कर लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त नागरिक सेवाएं जैसे चिकित्सा सुविधा, डाक तार और बैंकिंग को सुविधाओं का अनिवार्य भाग समझा जाता है। फिर भी इन सभी पक्षों में पर्यटन के प्रकार और गंतव्य की स्थिति के अनुसार परिवर्तन रहता है।

**iii) मनोरंजन पक्ष**

यदि आवास उपलब्धता प्रमुख रूप से पर्यटन के ठहरने की अवधि को बढ़ाने में प्रभावी है तो किसी पर्यटक केंद्र पर पर्याप्त मनोरंजन के तत्वों की व्यवस्था कुल मिलाकर पर्यटन स्थल के समय को बढा सकती है। विकास का यह पक्ष विश्राम और मन बहलाव के लिए अनिवार्य रूप से महत्वपूर्ण है। पर्यटन के संदर्भ में मनोरंजन की बहुत सी अभिव्यक्तियां हैं जिसमें बाहरी सक्रिय और निष्क्रिय मनोरंजन के आयोजन के अतिरिक्त हर प्रकार के व्यावसायिक मनोरंजन भी सम्मिलित हैं। महानगरों और प्रमुख नगरों के संदर्भ में यह समस्या किसी हद तक हल हो चुकी है क्योंकि अब पर्यटक ऐसी आंतरिक और बाहरी दोनों प्रकार की मनोरंजनात्मक सुख सुविधा प्राप्त कर सकते हैं जो स्थानीय जनसंख्या की भी आवश्यकताओं में शामिल है। फिर भी छोटे स्थानों में, जो संभवत: अधिक पर्यटन रुचि और आकर्षण के हो सकते हैं, ऐसे मनोरंजनात्मक सुख साधन पर्यटकों के लिए दिए जाने चाहिए। किंतु ऐसा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और गंतव्य के परिवेश को ध्यान में रखते हुए ही करना चाहिए।

पर्यटक अधिसंरचनात्मक सुविधा के प्राथमिक तत्वों के अतिरिक्त ''सहायक अधिसंरचनात्मक सुविधाओं और सेवाओं'' को पर्यटक केंद्र के व्यापक विकास के लिए अनिवार्य समझा जाता है। ये अधिकतर पारम्परिक और

देशी कला एवं कौशल पर्यटक रुचि के कुटीर उद्योगों के विकास के साथ-साथ सहायक सुविधाओं जैसे इसी प्रकार के कार्यों में लगे शिल्पियों और कारीगरों के लिए आश्रम और इसी प्रकार के उपयोग के लिए भूमि निर्धारण पर आधारित है। पर्यटन सेवाओं और सुख साधनों के प्रबंधन के लिए सेवा करने वाले लोगों की जरूरत होती है। उनके लिए भी घर और सहायक आवश्यकताएं जरूरी हैं। इस पक्ष की उपेक्षा के परिणाम स्वरूप जीवन की अमानुषिक परिस्थितियों सहित मलिन बस्तियों की उत्पत्ति भी होगी।

**बोध प्रश्न 1**

1) विभिन्न वहन क्षमताओं के विषय में पांच वाक्य लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजनाओं में पर्यटन विकास के कौन-कौन से प्रमुख महत्वपूर्ण पहलू हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

## 11.4 पर्यटन मास्टर प्लान

विश्व के सारे देशों में जहां पर्यटन विकास के प्रति सुव्यवस्थित दृष्टि राष्ट्रीय नीति का एक भाग है वहां पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा के विकास के लिए पर्यटन मास्टर प्लान के प्रतिपादन को महत्व दिया गया है। यह कई कारकों से प्रभावित होता है जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

1) सकारात्मक एवं नकारात्मक कारक जिन्होंने विशेष पर्यटक संसाधन के उचित उपयोग प्रभावित किया है या प्रभावित कर सकते हैं।

2) पर्यटन विकास के लिए किसी विशेष संसाधन की वहन क्षमता से सम्बद्ध पर्यावरणीय और पारिस्थितिक प्रभाव तथा पर्यटन विकास कार्यक्रम के वृहत व सूक्ष्म स्तर पर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव।

3) पहुंच और अधिसंरचनात्मक सुविधा की तैयारी से संबंधित वित्त प्रबंध की समस्याएं।

कॉरसिका (corsica) में पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा के लिए अनुकूल स्थान का निर्धारण, महत्वपूर्ण प्राकृतिक व मानव निर्मित संसाधन क्षेत्र की पहचान तथा उनकी सुरक्षा के लिए निर्देश, निर्धारित स्थान पर या उसके परिवेश में विकास के लिए पहुंच और भूमि नियोजन नीति की व्यवस्था समग्र पर्यटन मांस्टर प्लान के महत्वपूर्ण घटक हैं। वृहत स्तर पर ऐसी नीति योजना सूक्ष्म स्तर पर कार्यक्रम योजना का मार्गदर्शन करेगी। फ्रांस में तटीय पर्यटन विकास का मास्टर प्लान निम्न बातों पर बल देता है:

1) पर्यटन विकास वर्तमान रिसॉर्ट के पृष्ठ प्रदेश में आम तौर से तट के साथ हो, और

2) पर्यावरणीय संरक्षण हेतु विस्तृत क्षेत्रों का सुरक्षित वन, प्राकृतिक आरक्षित क्षेत्र, कृषि एवं वन्य क्षेत्र, के रूप में निर्धारण।

इन सारे कार्यों के निष्पादन में पर्यावरणीय सुरक्षा एवं पर्यटन संसाधनों और स्थाई प्राकृतिक निधि का संरक्षण ही मूल कारक रहे हैं।

निश्चित रूप से वृहत एवं सूक्ष्म दोनों स्तरों पर सम्पूर्ण पर्यटन मास्टर प्लान का भौतिक विकास योजना के मूल घटक के रूप में विशेष महत्व है।

वृहत स्तर पर पर्यटन विकास के लिए व्यापक मास्टर प्लान में निम्नलिखित बातें सम्मिलित होंगी:

क) पर्यटन और मनोरंजन के लिए नीतियां और प्राथमिकताएं,

ख) अधिसंरचनात्मक सुविधा विकास की योजना,

ग) विकसित, संरक्षित, सुरक्षित आदि किए जाने वाले क्षेत्रों का विस्तृत ब्योरा देने वाली भौतिक योजना,

घ) कार्यान्वयन, समन्वयन, और वित्त प्रबंधन के लिए नीति,

ङ) पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक कारकों और उनसे संबंधित समस्याओं का समाधान

च) कार्यवाई की योजना और परिवर्तनों तथा उनके प्रभावों के प्रबोधन की क्रियाविधि।

असंगत उपयोगों के जोखिम में डाले जाने वाले सीमित क्षमता के संसाधन जैसे कोई लोकप्रिय पर्यटन केंद्र, पर्वतीय रिसार्ट या तटीय कॅम्पलेक्स पर से दबाव कम करने, सीमित करने या नियंत्रित करने के लिए मौलिक विकास नीति में निम्नलिखित को सम्मिलित होना चाहिए:

क) प्रवेश पर प्रतिबंध लगाना,

ख) सुविधाओं को सीमित करना

ग) विभिन्न गतिविधियों का स्थानिक दृष्टि से विभाजन्

घ) वैकल्पिक गंतव्यों का विकास करना।

मास्टर प्लान के प्रतिपादन की ओर पहले कदम के रूप में पर्यटन संसाधनों की विशेषताओं और संभावनाओं का सर्वेक्षण (गहन और व्यापक दोनों) कराना अत्यावश्यक होगा। इन्हें गंतव्य क्षेत्र के भौतिक, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय गुणों के संबंध में विश्लेषित करना चाहिए। पर्यटन गंतव्य क्षेत्रों की योजना, विकास और प्रबंधन के पर्यटन मास्टर प्लान के विकास की मूलभूत रूपरेखा निम्नलिखित द्वारा स्थापित होगी:

- संसाधनों का संश्लेषण और पर्यटन उद्देश्यों से उनका अनुकूलतम उपयोग, और
- प्रक्षेपित पर्यटक आगमन का विश्लेषण।

मास्टर प्लान के भौतिक घटक पर्यटक सुसाध्यता और ढांचागत सुविधा, पर्यटन गतिविधि क्षेत्र के विभिन्न भागों के आन्तरिक व बाहरी प्रवेश्यता एवं संयोजन और प्रमुख मनोरंजनात्मक तथा खुले स्थानों का एक संगठित खुले स्थान के तंत्र के रूप में विभाजन की व्यवस्था की रूपरेखा स्थापित करेंगे।

पर्यावरणीय सुरक्षा, प्राकृतिक स्थलों का विकास, स्थल विकसित करना आदि से सम्बद्ध उपाय और कार्यक्रम ऐसे मास्टर प्लान के महत्वपूर्ण घटक हैं। इसके अतिरिक्त प्रतिवेश की पृष्ठभूमि से कॉम्पलेक्स का संयोजन और परिसर के विकास को नियंत्रण में रखने के उपाय को भी सुनिश्चित करना चाहिए।

पर्यटन परिसर के विकास को प्रतिवेश की ऐसी छोटी बस्तियों से जोड़ने की उचित कार्यवाई की योजना पर भी विचार करना अनिवार्य है जिनकी सामाजिक आर्थिक गतिविधि कॉम्पलेक्स में हो रही पर्यटन गतिविधियों से जुड़ी हुई है।

इन नीतियों और कार्यक्रमों का सविस्तार ब्योरा दिया जाना चाहिए और कॉम्पलेक्स तथा पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा को समय बद्ध विकास की संगठित भौतिक विकास योजना द्वारा ठोस आकार प्रदान करना चाहिए।

### 11.4.1 भौतिक विकास के मुद्दे

पर्यटन विकास केवल अर्थशास्त्र का ही विषय नहीं है बल्कि इसका संबंध उस स्थान और वहां के लोगों के भूगोल, समाजशास्त्र, मानव विज्ञान और पारिस्थितिकी से भी है। इन सबको पर्यटन गतिविधि तथा आतिथेय समुदाय के सर्वोत्तम लाभ की दृष्टि से पूर्णतया समझने और विश्लेषित करने की अवश्यकता है। यह पर्यटन योजना के व्यापक उपागम विशेष कर उन क्षेत्रों में जहां उत्पाद असुरक्षित संसाधनों के बने होते हैं पर बल देता है।

पर्यटन केंद्र और गंतव्य क्षेत्र बहुत अधिक लोगों के एकत्र होने के केंद्र है और उनके लिए सुरक्षित और सुविधाजनक प्रवेश, पार्किंग की सुविधा, पैदल यात्रियों के चलने और एकत्र होने के लिए स्थान, भोजन व्यवस्था

और आवास के लिए पर्यटक अधिसंरचनात्मक सुविधा, नागरिक सेवाएं, पर्यटक क्रय विक्रय, विश्राम और मनोरंजनात्मक गतिविधियां, स्थिति के अनुसार आकर्षण और ऐसी सुविधा की पर्यटकों द्वारा प्रक्षेपित मांग को उपलब्ध कराना चाहिए। स्पष्ट रूप से व्यक्तिगत सुख साधनों की उपलब्धता और पर्यटक अधिसंरचनात्मक सुविधा का माप स्थान-स्थान पर बदलेगा। फिर भी हर दशा में इन समस्त अधिसंरचनात्मक सुविधाओं को पर्यटक स्थल के संबंध में स्थानिक दृष्टि से आयोजित करना चाहिए और इनके मध्य उचित क्रियात्मक संबंध की उचित भौतिक योजना और रूपरेखा की आवश्यकता है।

पर्यटन से संबंधित क्रियाएं व्यवहारिक रूप से भू-विस्तीर्ण के अनुसार है। चाहे पर्यटक केन्द्र नगर विकास क्षेत्र का एक भाग हो या अलग कॉम्पलेक्स के रूप में स्थित हो फिर पर्यटक रिसॉर्ट के रूप में स्वयं नगर क्षेत्र हो। पर्यटन क्षेत्र के सम्पूर्ण संघटित विकास पर बल दिया जाना चाहिए और विभिन्न पर्यटन केंद्रों के लिए प्रत्येक को वृहत नगर योजना या क्षेत्र नगर योजना के रूप में कल्पना करनी चाहिए। इस संदर्भ में इस दिया जाना चाहिए कि महानगर और प्रमुख नगरों के मामले में पर्यटकों की आवश्यकताओं विशेषकर अधिसंरचनात्मक सुविधा के क्षेत्र में इन नगरों की आवश्यकताएं उन नगरों में चल रही योजनाओं से ही पूरी हो सकती है। किंतु छोटे नगरों या अलग थलग स्थानों पर पर्यटकों के लिए दी जाने वाली अधिसंरचनात्मक सुविधाओं और सेवाओं को इस प्रकार से व्यवस्थित करना चाहिए कि स्थानीय जनता भी उसका उपयोग उचित विस्तार और आवर्धन के साथ कर सके। परिणामस्वरूप इन स्थितियों में पर्यटन पर निवेश से अधिकतर ऐसे छोटे नगरों और केंद्रों के विकास को हर प्रकार का लाभ पहुंचाना चाहिए जहां पर्यटक स्थल स्थित हो। इसके अतिरिक्त विकास योजना को उपयुक्त चरणों में कार्यान्वित किया जाना चाहिए। इसकी रूपरेखा इस प्रकार तैयार करनी चाहिए कि भविष्य में संवर्धन और विस्तार किया जा सके।

### 11.4.2 नगर में पर्यटक स्थल

किसी पर्यटन क्षेत्र की स्थापना पहला महत्वपूर्ण कदम है। यदि पर्यटक स्थल नगर में स्थित हो तो उनको इस प्रकार विभाजित करना चाहिए कि उनके चारों ओर पर्याप्त क्षेत्र पर्यटन गतिविधि क्षेत्र या विशेष क्षेत्र के रूप में बचा रहे। किसी नगर में जहां ऐसे अनेक पर्यटक स्थल हों (जैसे ऐतिहासिक नगरों और तीर्थ स्थानों में) वहां इस बात का प्रयास करना चाहिए कि ऐसे विस्तृत स्थानों की पहचान की जा सके जो बहुत से स्थलों को एक कॉम्प्लेक्स के रूप में घेरे हुए हों ताकि भौतिक विकास का एक संघठित उपागम संभव हो सके। ऐसे मामलों में प्रत्येक पर्यटक स्थल की अधिसंरचनात्मक सुविधा की योजना और भौतिक विकास की कल्पना सम्पूर्ण पर्यटन विकास योजना की सीमा के अन्दर होनी चाहिए।

पर्यटन विकास योजना में निम्नलिखित को सम्मिलित होना चाहिए:

क) नगरीय तंत्र के भाग के रूप में विभिन्न पर्यटक स्थलों तक पहुंच और उनमें संयोजन,

ख) वाहनों की सीमित प्रवेश्यता और पैदल यात्रा की सुगमता पर आधारित आंतरिक परिसंचालन,

ग) आवश्यक पर्यटक अधिसंरचनात्मक सुविधाओं की स्थापना के लिए प्रत्येक स्थल के चारों ओर स्थल निर्धारण और इसके साथ ही

घ) जहां तक संभव हो उचित नियमों द्वारा यह सुनिश्चित करना कि प्रतिवेश में अत्यधिक घना विकास न हो। एक महत्वपूर्ण मौलिक धारणा यह होनी चाहिए कि अपने निकटतम प्रतिवेश में सहनशील उपयोगों की स्थापना द्वारा पर्यटन स्थल की पहचान और पुनीतता को बनाए रखा जाए।

पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा के विकास के लिए निर्धारित स्थान के अन्दर ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि वास्तविक पर्यटक स्थल अधिसंरचनात्मक सुविधा में निमग्न न हो बल्कि उसे सबसे प्रमुख होना चाहिए। ऐसा तभी संभव होगा जब निर्धारित स्थल के आन्तरिक स्थानिक संघटन की योजना ऐसी हो कि अधिसंरचनात्मक पर्यटन कॉम्पलेक्स प्रमुख प्रवेश सड़क से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हो और वहां तक सुगमता से पहुंचा जा सके। अधिसंरचनात्मक सुविधा तथा पर्यटक स्थल के मध्य काफी बड़ा विस्तृत हरा भरा क्षेत्र होना आवश्य है।

इसके लिए अनिवार्य है कि धीरे-धीरे क्षेत्र को विकसित किया जाए। इसकी आवश्यकता नहीं है कि अधिसंरचनात्मक सुविधा को लम्बे चौड़े क्षेत्र में फैला कर विकसित किया जाए बल्कि इस सुविधा को सुनियोजित ढंग से विकसित किया जाना चाहिए ताकि निर्धारित स्थल का अधिक से अधिक भाग हरा भरा रह सके और कार्यशीलता की दृष्टि से अधिक बेहतर सेवाएं प्रस्तुत की जा सकें।

### 11.4.3 योजना द्वारा संरक्षण

पर्यटक केंद्रों के संदर्भ में संरक्षण में केंद्रों की "पर्यटन विशेषता" (tourist character) की सुरक्षा भी सम्मिलित होती है और छोटे नगरों के मामले में यह पक्ष विशेष रूप से आवश्यक होता है क्योंकि वह सब मिलकर विरासत और ऐतिहासिक महत्व के कारण पर्यटकों के लिए आकर्षण के केंद्र बनते हैं। ऐसे नगरों की आर्थिक विविधता के समान ही भौतिक विकास को इस प्रकार नियोजित करना चाहिए कि उसकी विरासत और ऐतिहासिक पवित्रता को भौतिक रूप से बनाया रखा जा सके ऐसा उनके प्रतिवेश में पर्याप्त हरा भरा मध्यवर्ती क्षेत्र रख कर और पर्यटन की उन्नति के वृहत हित में नया विकास करके किया जा सकता है।

पर्यटक स्थल में भौतिक संरक्षण को सामान्य सौन्दर्यीकरण और नवीकरण करके अभिव्यक्त किया जा सकता है ताकि अच्छे उद्यानों, फर्श और पर्यटक सामग्री जैसे पर्यटक साहित्य, गाइडें, कलाकृतियों की दुकानें, आदि सहित उसे अधिक सुंदर और आकर्षक बनाया जा सके। यद्यपि यह ऐसा मामला है जो आत्यंतिक नियंत्रण, उद्देश्य अभिज्ञता और अतिसंवेदनशीलता के योग्य है फिर भी बड़े पैमाने पर नवीकरण और सौंदर्यीकरण से भी अधिक सुरक्षा और संरक्षण पर बल देना चाहिए।

स्थल विकास में, विशेष कर पर्यटन गतिविधि क्षेत्रों में वर्तमान प्राकृतिक विशेषताओं का संरक्षण पर्यटकों के आकर्षण को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त उचित रूप से निर्धारित भूदृश्य योजना के अनुसार प्रचुर वृक्षारोपण को स्थल विकास कार्यक्रम का अनिवार्य भाग होना चाहिए। अधिसंरचनात्मक सुविधा के लिए निर्धारित स्थलों के भवनों की मौलिक योजना के साथ एक मंद गति का विकास जुड़ा होना चाहिए।

### 11.4.4 स्थानीय योजना पक्ष

किसी पर्यटक स्थल या पर्यटक केंद्र की भौतिक विकास योजना का प्राथमिक उद्देश्य पर्यटकों को आकर्षित करना है क्योंकि इस दृश्य योजना में आकृति और सौंदर्य उनके प्रतिपादन और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। यह योजना एक प्रवेश मार्ग तैयार करने, भूदृश्य निर्माण, नवीकरण और सामान्य सौंदर्यीकरण या पर्यटकों के लिए आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने में संबंधित है।

अत: पर्यटक स्थलों और परिसरों की भौतिक योजना को नगर की दशा और भूदृश्य योजना प्राचलों सहित भौतिक धरातल और अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के संश्लेषण का प्रयास करना चाहिए ताकि उभर कर सामने आने वाला विकास कार्यात्मक और पर्यावरणीय रूप से अनुकूल हो और साथ ही सौंदर्य की दृष्टि से देखने में आकर्षक हो।

व्यक्तिगत या सामूहिक पर्यटकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए पर्यटक स्थल के विकास की योजना बनाई जानी चाहिए। इसे पर्यटक स्थल और परिवेश की भौतिक विशिष्टताओं से संबंधित होना चाहिए। ऐसा प्रयास स्थल को विवेकपूर्ण विकास और पर्यटक संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग के योग्य बना देता है।

समस्त अधिसंरचनात्मक सुविधाओं का विकास स्मारक के आस पास करना चाहिए। बड़े कॉम्प्लेक्सों के विषय में भी ऐसे ही सिद्धांत अपनाए जा सकते हैं। एक सम्पूर्ण स्थानिक परिरूप की रचना पर विचार करके ऐसा किया जा सकता है। इसमें ही पर्यटक रुचि के व्यक्तिगत केंद्र होंगे जिन्हें समग्र परिरूप का एक भाग समझा जा सकता है। सुंदर प्राकृतिक स्थलों में भी इस प्रकार की योजना की जा सकती है।

**बोध प्रश्न 2**

1) पर्यटन के संबंध में किन कारकों ने मास्टर प्लान के प्रतिपादन को अनिवार्य बना दिया है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विभिन्न पर्यटन स्थनों को किसी नगर के अन्दर किस प्रकार स्थापित किया जा सकता है? पांच वाक्यों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

## 11.5 भौतिक योजना : पहाड़ी पर्यटन

आजकल अधिकांश पर्वतीय रिसॉर्ट में भीड़ बहुत होती है और हर प्रकार के संसाधनों का अभाव अनियोजित पर्यटन विकास के कारण उभर कर सामने आया है। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि पर्यटन हिमालय और उप हिमालय प्रदेशों के पहाड़ी क्षेत्रों और पहाड़ी नगरों के सामाजिक-आर्थिक विकास में सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। यह तभी संभव है जब संसाधनों का आयोजन और प्रबंधन वैज्ञानिक आधार पर किया जाए। पर्यटन के आयोजकों को यह समझ लेना चाहिए कि मैदानों के लिए उपयुक्त नमूना हिमालय क्षेत्र के लिए उचित नहीं होगा और न ही यूरोपीय और अमरीकी रिसॉर्ट के अनुभव भारत के संदर्भ में आदर्श सिद्ध होंगे।

यदि वैज्ञानिक आधार पर पहाड़ी पर्यावरण का उपयोग किया जाए तो यह खुले माहोल में मनोरंजन और पर्यटन के लिए आदर्श परिस्थितियां प्रस्तुत कर सकता है। यूरोप के बहुत से अलपाइन देशों में पर्यटन विकास प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कारक रहा है और बहुत से विकासशील समाजों और द्वीपीय अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक परिवर्तनों का कारण भी रहा है। यह भी देखने में आया है कि बहुत से पिछड़े क्षेत्र पर्यटन के विकास के लिए बहुत आकर्षक संसाधन का आधार प्रस्तुत करते हैं। यही बात बिना किसी अपवाद के हिमालय और उप हिमालय जनपदों और देश के क्षेत्रों के लिए भी सत्य है।

हिमालय क्षेत्र विस्तृत पारिस्थितिक परिसर और जैव विविधता सहित प्रकृति की कुछ अति दुर्लभ रचनाएं प्रस्तुत करते हैं। बहुत से भव्य प्राकृतिक आकर्षणों और सुरम्य सौंदर्य के अतिरिक्त पर्यटन संसाधन का धार्मिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिमाण निचले हिमालय क्षेत्र की गोद में पाए जाने वाले पहाड़ी जनपदों के संदर्भ में महत्वपूर्ण हो जाते हैं। जनजातीय जीवन, जातीय संस्कृति, जलोक परम्पराएं, लोक साहित्य और असंख्य तीर्थ एवं पवित्र स्थल प्रकृति की भव्यता सहित एक व्यवस्थित समष्टि के रूप में विकसित हुए प्रतीत होते हैं।

1950 के विकास की त्वरित गति, क्रमिक समाजीकरण और पर्यटन के आधार का विस्तार, शैक्षिक अभिज्ञता और उन्नत परिवहन एवं अधिसंरचनात्मक सुविधाओं ने मिलकर लोकप्रिय पहाड़ी रिसॉर्ट जैसे शिमला, नैनीताल, मसूरी, दार्जलिंग आदि में पर्यटन से सम्बद्ध अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के केंद्रीकरण में योगदान दिया है। क्रमबद्ध ढंग से उन्नत योजना के अभाव में ऐसे केंद्रों में पर्यटकों के लिए निरंतर आगमन ने मांग और आपूर्ति के संतुलन को अस्त व्यस्त कर दिया है। इनके कारण निम्नलिखित बातें उत्पन्न हुई हैं:

- भूमि उपयोग की घोर समस्या
- पर्यावरणीय प्रदूषण और गुणवत्ता में कमी
- अधिसंरचनात्मक सुविधाओं, परिवहन और सेवाओं पर दबाव, और
- परस्पर विरोधी परिस्थितियां

पहाड़ी क्षेत्र आकर्षक पर्यटन स्थल हैं। इनके विकास के लिए वहां के सामाजिक आर्थिक परिवेश और पर्यावरण का भी ध्यान रखना चाहिए। पर्यटन नियोजन और कार्यक्रम निर्माण का कार्य करते समय इनका ध्यान रखना होगा।

### 11.5.1 योजना की अनिवार्यताएं

पहाड़ी अंचलों में पर्यटन योजना और आवास के वैज्ञानिक विकास के लिए निम्नलिखित विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता होगी:

- स्थानीय पर्यावरण और पहाड़ी आवास पर विकास का प्रभाव,
- पर्यटक संसाधन और अधिसंरचनात्मक सुविधा की आवश्यकता का मूल्यांकन,
- क्षेत्र और अन्य पक्षों की वहन क्षमता के समनुरूप विकास की हद तय करना

सारे विकासीय कार्यक्रमों में विशेष रूप से पर्यटन संबंधी विकास में निम्न बातों पर मुख्य ध्यान रखना चाहिए।

- जीवन की गुणवत्ता का विकास
- उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा करना और उसे कायम रखना, और
- शहर की अर्थव्यवस्था में समग्र रूप से सुधार।

वास्तव में पर्यटन को उन लक्ष्यों की प्राप्ति का साधन समझना चाहिए अपने आप में साध्य नहीं। इसी संदर्भ में पूर्व उल्लिखित वहन क्षमता की अवधारणा का महत्व है।

**यही समय है जब इस बात का प्रयास करना होगा कि हिमालय एक कूड़ेदान न बन जाए। सरकार के लिए आवश्यक है कि कानूनी रूप से हिमालय क्षेत्र में पॉलीथीन के उपयोग पर रोक लगा दे।**

हिमालय में संसाधनों के उपयोग की नीति पर भी सर्वसम्मति पर पहुंचना अनिवार्य है। हिमालय की अधिक ऊंचाइयों पर संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्रों की पहचान और उसका संरक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मध्यवर्ती एवं केंद्रीय मंडलों सहित उन्हें जीव मंडलीय आरक्षित क्षेत्र घोषित करके ऐसा किया जा सकता है। अत: ऐसे क्षेत्रों में पर्यटन गतिविधियां सावधानी के साथ जारी रखना चाहिए।

बिखरे हुए आवासीय प्रारूप पहाड़ी क्षेत्रों की विशेषता हैं। यहां बस्ती और बस्तियों के समूह आडम्बरहीन होते हैं। पर्यटन कॉम्प्लेक्स की योजना और सुविधाओं को समूह पर समझदारी के साथ विचार करना चाहिए जिससे ऐसा न लगे कि एक बाहरी अजनबी सुविधा व्यवस्था को एक पारंपरिक परिवेश पर थोप दिया गया है।

पर्यटन कॉम्प्लेक्स के विकास में परम्परा के अनुरूप योजना को बनाए रखना ही चिंतन का मुख्य विषय होना चाहिए।

किसी पहाड़ी पर्यटन क्षेत्र में पर्यटन सुख साधन और सुविधाओं का बिखरा हुआ स्थानिक प्रारूप केंद्र बिंदु से जोड़ दिए जाने पर पर्यटक के ग्रामीण कॉम्प्लेक्स के श्रेणीबद्ध विकास के योग्य बना देगा। इसे गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत प्रदान करके परम्परागत ऊर्जा की खपत में किफायत की जा सकती है। इसके अतिरिक्त ऐसे पर्यटक कॉम्प्लेक्स के स्थानिक प्रारूप पर्यटन से संबंधित गतिविधियों और उसके सहवर्ती लाभों को पहाड़ी जनपदों के एक या दो केंद्रों में एकत्र कर देने के बजाए एक बड़े क्षेत्र में मिलाने में सहयोग देगा। यह संघर्ष पैदा करने वाली परिस्थितियों और पहाड़ी पर्यावरण के खतरों को भी दूर कर सकेगा।

किसी वर्तमान रिसॉर्ट में अतिरिक्त अधिसंरचनात्मक सुविधा की योजना बनाते समय न्यूनीकृत पैमाने पर पर्यटक ग्राम की धारणा को भी समाविष्ट कर लेना चाहिए। यह पर्यटक से संबंधित अधिसंरचनात्मक सुविधा को, जब भी आवश्यता होगी, योजनाबद्ध परिक्षेपण के योग्य बना देगा।

### 11.5.2 पहुंचने की सुविधा

हिल स्टेशन, रिसॉर्ट आदि के संबंध में वहां पहुंचने और घूमने की समस्या महत्वपूर्ण इसके निम्नलिखित कारण हैं:

- कठोर भूभाग,
- मोटर गाड़ियों के चलने पर अपरिहार्य प्रतिबंध,
- सड़कों कि निर्माण और सुधार में भारी लागत की आवश्यकता,
- पहाड़ी रिसॉर्ट को मैदान के निकटवर्ती रेलमार्ग के जोड़ने में रेलवे की सीमाएं, और
- पर्यटक आकर्षण के स्थानीय क्षेत्र में पर्याप्त अन्तस्थ और गाड़ी पार्क करने की सुविधा दे पाने में सामान्य कठिनाई।

बहुत से पहाड़ी रिसॉर्ट उचित प्रवेशता और घूमने फिरने की सुविधा के अभाव में प्रतिवर्ष पर्यटक खो रहे हैं। इसने स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

उत्तरी, उत्तर-पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी भारत के उपहिमालय या शिवालिक में 60 से भी अधिक मुख्य एवं लघु पर्यटक केंद्र और पहाड़ी रिसॉर्ट हैं। इनमें से मुश्किल से नौ रिसॉर्ट रेलमार्ग पर स्थित हैं। इससे स्पष्ट है कि पहाड़ी रिसॉर्ट के संदर्भ में प्रवेश्यता कारक सड़क परिवहन पर बहुत अधिक निर्भर है। पहाड़ी भूभाग पर सड़क निर्माण और सुधार की अत्यधिक लागत के बावजूद क्षेत्र के अनुरूप एक संघटित योजना बनानी पड़ेगी और पर्यटन को उन्नत करने के लिए उचित चरणों में कार्यान्वित करना पड़ेगा। यहां बनने वाली सड़कों का घुमाव कम तीखा होना चाहिए और दो तरफा यातायात की व्यवस्था होनी चाहिए। सड़क पर

जहां आवश्यकता हो यातायात के उचित संकेत और सिगनल, और सड़क के किनारे सुरक्षा बाड़ होनी चाहिए लेकिन सबका महत्व होते हुए भी ऐसा कोई कार्य प्रारंभ नहीं करना चाहिए जिनका परिस्थिति और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो। इसके साथ ही साथ राष्ट्रीय स्तर पर जहां तक संभव हो सभी प्रमुख रिसार्टों को हवाई मार्ग से जोड़ना चाहिए और हवाई अड्डे बनाए जाने चाहिए। परंतु यहां भी पर्यावरण का ध्यान रखना होगा।

गन्तव्य क्षेत्रों में पर्यटकों की कारों, गाड़ियों और टैक्सियों की पार्किंग के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध किया जाना चाहिए। ऐसी पार्किंग सुविधा की व्यवस्था में काफी धन खर्च होगा। अत: यह आवश्यक है कि ऐसी सारी पार्किंग परियोजनाओं को शहरी विकास कार्यक्रम का ही एक हिस्सा मानते हुए प्रवणता को बहुस्तरीय पार्किंग स्थान के साथ ही गोदाम, भंडार और सामान्य व्यापार के लिए जगहों के रूप में उपयोग द्वारा व्यवहार में स्वत: वित्त प्रबंधक सुविधा के रूप में विचार किया जाए।

फिर भी किसी पहाड़ी नगर में पर्यटकों के एक पर्यटन बिंदु से दूसरे तक आने जाने के लिए विस्तृत रज्जुमार्ग नेटवर्क का उस क्षेत्र में प्रवेश एक नया कदम होगा जो वर्तमान परिवहन मार्गों के नेटवर्क की सीमाबद्धता को कम करके विशिष्ट स्थानीय प्रवेशता की आवश्यकताओं को पूरा करने में सम्पूर्ण सहयोग देगा। पश्चिमी देशों के रिसॉर्ट में रज्जुमार्ग की उपलब्धता सामान्य बात है और भारत में भी अब इसका आरंभ हो चुका है किंतु यह कुछ ही नगरों तक सीमित है। अत: सड़क के साथ रज्जुमार्ग का परिवहन नेटवर्क पहाड़ी शहरों और रिसॉर्ट की प्रवेश्यता में सुधार कार्यक्रमों के भौतिक विकास का महत्वपूर्ण तत्व है।

## 11.6 भौतिक विकास : तटीय रिसॉर्ट

सारी दुनिया में तटीय क्षेत्रों का विकास और उपयोग निम्न प्रकार से हो रहा है:

- बड़े पैमाने पर नगरीकरण,
- प्रमुख तटीय नगरों में व्यापार और उद्योगों का केंद्रीकरण,
- समुद्री संसाधनों का अधिकतम उपयोग, और
- बढ़ते अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन के प्रबंध के साथ-साथ मनोरंजन और विश्राम की मांग की व्यवस्था।

लगातार सिकुड़ते हुए तटीय स्थलों में मनोरंजनात्मक गतिविधियों में वृद्धि के लिए औद्योगिक, आवासीय और मनोरंजनात्मक सुविधाएं देने के लिए काफी प्रतिस्पर्धा होती है। किंतु अभी हाल ही में तटीय संसाधनों और मानव आवासों को प्रभावित करने वाले बहुत से पर्यावरणीय मुद्दे भी उठाए गए हैं। यह विविध तटीय विकास के लिए उचित प्रबंधन और नियमन की आवश्यकता का बोध कराता है।

भारतीय तट संरचनात्मक और ऊपरी धरातल परत की दृष्टि से बहुत विविध है। इस विविधता का अपने अपने तटीय क्षेत्रों की संसाधन संभावना के तुलनात्मक स्तरों, अंचलिक विकासों, आवासीय प्रारूपों, रूपरेखा और संयोजन पर गहरा प्रभाव है। प्रायद्वीपीय भारत 55 तटीय जनपदों पर आधारित है। इनमें 104 बड़े शहर (मेट्रो वर्ग I और II) जिनमें 6 महानगर और 49 वर्ग I के नगर हैं। इनमें से सारे 6 महानगर मुम्बई, कलकत्ता, चेन्नई, कोची, विशाखापटनम और सूरत तथा 27 वर्ग I के नगर हैं।

हालांकि पूर्वी और पश्चिमी समुद्र तटों पर अनेक पर्यटक केंद्र हैं किंतु समुद्र तटीय रिसॉर्ट कुछ ही हैं जैसे पश्चिमी बंगाल में दीघा, उड़ीसा में पुरी-कोणार्क, चिलका गोपालपुर, तमिलनाडु में रामेश्वरम, कन्याकुमारी-कोवलम और केरल तथा गोवा के कई समुद्री बालू तट जो अधिकांश समुद्री यात्रा करने वाले राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकृष्ट करते हैं।

प्रमुख तटीय बस्तियां न केवल विशिष्ट रूप से स्थित समुद्री गतिविधियों को आकृष्ट करती हैं बल्कि सम्बद्ध गतिविधियों और उपयोगों को भी आकर्षित करती हैं। इनमें उद्योग, व्यापार और वाणिज्य के साथ-साथ संस्थागत उपयोग भी सम्मिलित हैं जिनमें तट से दूर की बस्तियों को कंगाल कर देने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। इसके परिणामस्वरूप तटीय पर्यटन संसाधन जैसे बालू तट आदि शहरी और औद्योगिक विस्तार के कारण या तो समाप्त हो जाते हैं या अधिक दूरस्थ स्थितियों की ओर ढकेल दिए जाते हैं। अत: तटीय बस्तियों में पर्यटन तथा गैर पर्यटन दोनों प्रकार के कार्यों के प्रभावशाली प्रबंध के समग्र विकास के लिए एक संघटित नीति उपागम की आवश्यकता बढ़ गई है:

पर्यटन रिसार्ट के तौर पर तटीय बस्तियों के विकास के लिए व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो योजना में हस्तक्षेप कर सके। योजना में हस्तक्षेप को निम्नवत रूप से पहचाना गया है:

1) समुद्री रिसॉर्ट और रेतीले तटीय पर्यटन परिसरों को अलग-अलग देखना चाहिये। उन्हें प्रमुख शहरी केंद्रों से अलग ही रखना चाहिए ताकि पर्यटक और गैर पर्यटक गतिविधियों के मध्य कार्यात्मक संघर्ष टाला जा सके।

2) पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा को पर्यटन गतिविधियों के अनुरूप तटरेखा के उत्कर्ष विस्तार के साथ साथ बिखरे हुए स्वरूप में योजना बनानी चाहिए। इसे केवल एक या दो स्थितियों पर ही अनावश्यक रूप से केंद्रित नहीं होना चाहिए। ऐसा करने से पर्यटन गतिविधि के लाभ विस्तृत क्षेत्र तक पहुंच सकेंगे विशेष रूप से तटीय पृष्ट प्रदेश के छोटे ग्रामीण आवासों में।

3) विभिन्न मनोरंजनात्मक तत्वों को समाविष्ट करते हुए पर्यटक संसाधन के सुरक्षा के अनुकूल उपयोग को ध्यान में रखते हुए विस्तृत समुद्री नगर विकास की व्यापक योजना का निर्माण करना चाहिए।

4) पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा को जरूरत से ज्यादा हावी होने से रोकना भी अनिवार्य है। इसको रोकने के लिए इसके विकास को सामान्य रूप से वर्तमान रिसॉर्ट के पृष्ठ प्रदेश में तट के साथ-साथ आयोजित करना पड़ेगा। मुख्य नेटवर्क की योजना तट के सहारे-सहारे किंतु कुछ दूरी पर तैयार करनी पड़ेगी और ऐसा करने से पृष्ठ प्रदेश क्षेत्र के विभिन्न शहरी केंद्रों में परस्पर संयोजन संभव हो सकेगा और तट पर अधिंसरचनात्मक सुविधा के चुने हुए बिंदुओं तक ले जाने वाली सड़कें भी उपलब्ध होंगी। यूरोप के बहुत से देशों जैसे फ्रांस, यूगोस्लाविया, साइप्रस, कॉरसिका, तुर्की, यूनान ओर कई अन्य देशों में रिसॉर्ट विकास की जिस धारणा का व्यापक रूप से समर्थन किया जा रहा है वह सीमित क्षमता के संसाधन जैसे तटीय क्षेत्रों में असंगत उपयोगों से सुरक्षित विकास के दबाव को सामंजित करने, घटाने और नियंत्रित करने की ओर निर्दिष्ट है। इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं प्रवेश को कम करना, सुविधाओं को सीमित करना, विभिन्न गतिविधियों का विभाजन, गतिविधियों को नियत करना और वैकल्पिक गंतव्यों का विकास करना।

**बोध प्रश्न 3**

1) पहाड़ी क्षेत्रों में गंतव्य तक पर्यटक को प्रवेश्यता प्रदान करने से संबंधित समस्याओं का वर्णन पांच पंक्तियों में कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) तटीय बस्ती को पर्यटक रिसॉर्ट में विकसित करने के विषय पर पांच पंक्तियां लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

## 11.7 सारांश

पिछले तीन दशकों में पर्यटन का महत्व काफी बढ़ गया है। यह महत्व केवल सरकार के लिए मनोरंजन के साधन के रूप में ही नहीं बल्कि रोजगार और सरकार के लिए विदेशी मुद्रा विनिमय के साधन के रूप में है। पर्यटन उद्योग के विकास ने पर्यटन में योजना की आवश्यकता को स्पष्ट किया है।

इस इकाई में आपने योजना बद्ध पर्यटन के लिए विभिन्न आवश्यक तत्वों के विषय में पढ़ा। इस इकाई ने यह भी व्यक्त किया कि किस प्रकार अधिसंरचनात्मक सुविधा पक्ष की उचित व्यवस्था पर्यटन के विकास के लिए और

अधिक प्रेरणा देती है। इस संदर्भ में इस इकाई ने पर्यटन विकास में प्रवेश और भूमि उपयोग के प्रश्नों को संगठित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मास्टर प्लान के महत्व को रेखांकित किया है। इस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए इस इकाई ने पहाड़ी और तटीय रिसॉर्ट के उदाहरण लिए और इन पर्यटक स्थलों के लिए प्रवेश्यता स्थापित करने के महत्व को और उपलब्ध क्षेत्र के अनुरूप भूमि उपयोग करने को रेखांकित किया है।

## 11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) अपने उत्तर में आपको भौतिक, पर्यावरणीय और मनोवैज्ञानिक वहन क्षमताओं के विषय में विचार व्यक्त करना चाहिए और उन्हें समझना चाहिए। देखिए उपभाग 11.3.1

2) देखिए भाग 11.3

**बोध प्रश्न 2**

1) आपके उत्तर में सम्मिलित होना चाहिए:
   1) पर्यटक संसाधनों के दुरुपयोग का वर्णन,
   2) पर्यटक स्थल की वहन क्षमता पर दबाव, और
   3) अधिसंरचनात्मक सुविधा के लिए वित्त प्रबंध और प्रबंधन संबंधी समस्या । देखिए भाग 11.4

2) आपके उत्तर में सम्मिलि होना चाहिए :
   1) पर्यटक स्थलों का उचित विभाजन,
   2) विभिन्न स्थलों के मध्य संयोजन की स्थापना, और
   3) पर्यटक स्थलों के परिवेश में बड़े पैमाने के विकास को रोकना। देखिए उपभाग 11.4.2

**बोध प्रश्न 3**

1) देखिए उपभाग 11.5.2

2) देखिए भाग 11.6